Cambridge Assessment International Education

Cambridge International AS Level

HINDI LANGUAGE **8687/02**

Paper 2 Reading and Writing **October/November 2025**

INSERT **1 hour 45 minutes**

1423086514-I

INFORMATION
- This insert contains the reading passages.
- You may annotate this insert and use the blank spaces for planning. **Do not write your answers** on the insert.

सूचना
- इस अंश वाचन में पाठांश सम्मिलित हैं।
- आप इस अंश वाचन पर अपनी टिप्पणियाँ जोड़ सकते हैं तथा खाली स्थान का उपयोग आयोजन करने के लिए कर सकते हैं। **अपने उत्तर** इस पृष्ठ पर **न लिखें**।

This document has **4** pages. Any blank pages are indicated.

© UCLES 2025

भाग 1

गद्यांश 1 को पढ़ें और **प्रश्न 1, 2** और **3** के उत्तर प्रश्नपत्र पर लिखें।

गद्यांश 1

प्रौद्योगिकी वरदान या अभिशाप?

समय के साथ सुख-सुविधाओं की आवश्यकता मानव जीवन में पैदा होने लगी तो प्रौद्योगिकी ने अपने चमत्कार दिखाने शुरू किए। प्रौद्योगिकी में प्रगति के बावजूद जीवन में सफलता के दो शक्तिशाली स्तंभ, नैतिकता और संतुष्टि, अपरिवर्तित रहे हैं। नैतिकता की राह सादगी से निकलती है। आवश्यकताएँ तो हमेशा अपना मुँह खोलती हैं, लेकिन संतुष्टि खुशियों का द्वार खोलती है। जहाँ प्रकृति के साथ जुड़ाव अनेक समस्याओं का समाधान है, वहीं कृत्रिम ऐशोआराम स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं के जनक हैं।

नि:संदेह प्रौद्योगिकी जीवन के कुछ हिस्सों को आसान बना रही है। पहले सारा काम हाथ से किया जाता था, लेकिन अब मशीनें भारी कामों का दबाव ले रही हैं। इसके परिणामस्वरूप जिस काम में पहले महीनों लग जाते थे, वह काम आज पलक झपकते ही हो जाता है। मनुष्य ने हमेशा प्रगति के लिए प्रयास किया है, लेकिन अब गति तीव्र हो गई है।

प्रौद्योगिकी केवल एक शब्द नहीं एक अवधारणा है। प्रौद्योगिकी के चमत्कार चिकित्सा, संचार-साधनों, कृषि, आदि क्षेत्रों में दृष्टिगोचर होते हैं। वर्तमान समय में हमें उन छोटी-मोटी बीमारियों से डरने की आवश्यकता नहीं है जो हमारे पूर्वजों के लिए विनाशकारी थीं। आज मनुष्य ने पहले लाइलाज मानी जाने वाली कई गंभीर बीमारियों का इलाज खोज लिया है। अतीत में किसने कल्पना की होगी कि हम मानव अंगों का प्रत्यारोपण करने में सक्षम होंगे? अब दीर्घायु होने की आशा वास्तविक हो गई है।

हम शक्तिशाली परमाणु बम और अन्य हथियारों से होने वाली तबाही और विनाश को कैसे अनदेखा कर सकते हैं? यद्यपि यह सही है कि विज्ञान और प्रौद्योगिकी ने पृथ्वी लोक को दूसरा स्वर्ग बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ी है, तथापि यह भी सत्य है कि इसी विज्ञान ने मानव के लिए नरक का द्वार भी खोल दिया है। हमारे पूर्वज हमारे बारे में कैसा महसूस करते होंगे कि हम उस शिल्प या हस्तकला के कौशल को भूल रहे हैं जो उन्होंने हमें दिया था। क्या हम अब पूर्ण रूप से भोगवादी व अकर्मण्य नहीं बन रहे हैं?

केवल मानवजाति को ही क्षतिग्रस्त होने का संकट नहीं है। वैज्ञानिक विकास की तलाश प्राकृतिक संसाधनों, पारिस्थितिकी की विविधताओं के उत्पीड़न और वन्यजीवों के आवास के नाश पर समाप्त होती हैं। उदाहरण के लिए, जीवाश्म ईंधन का उपयोग प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन का कारण बन गया है। रासायनिक पदार्थों का उत्पादन भी पर्यावरण को नुकसान पहुँचाने और वन्यजीवों को ख़तरे में डालने का कारण बन रहा है। दोनों पहलुओं का अध्ययन करने पर प्रतीत होता है कि सत्यता की गूंज तो दोनों पक्षों में है, किन्तु वास्तव में दोषी विज्ञान या प्रौद्योगिकी नहीं, स्वयं मानव है। अत: मनुष्य जाति का कल्याण इसी में है कि वह विज्ञान को अपना स्वामी न बनाकर उसे सेवक की भूमिका तक ही सीमित रखे।

भाग 2

गद्यांश 2 को पढ़ें और **प्रश्न 4** और **5** के उत्तर प्रश्नपत्र पर लिखें।

गद्यांश 2

कृत्रिम बुद्धि की भूमिका

कृत्रिम बुद्धि (एआई) अपनी स्थापना के बाद से तेजी से प्रगति कर रही है। आज के दौर में, कृत्रिम बुद्धि के द्वारा दैनिक कार्यों के बारे में सरल निर्णय लेने एवं जटिल समस्या का समाधान खोजना संभव है। अब यह हमारे दैनिक जीवन के विभिन्न क्षेत्रों को आसान बनाकर समय की बचत कर रही है। जिससे यह जलवायु परिवर्तन जैसी गंम्भीर वैश्विक समस्या का समाधान खोजने की नई संभावनाओं के द्वार खोल रही है। हालाँकि इसके लाभ के साथ-साथ जोख़िम भी हैं जिन पर विचार करने की आवश्यकता है।

दैनिक कार्यों के लिए कृत्रिम बुद्धि का उपयोग करने का एक सबसे महत्वपूर्ण लाभ यह है कि यह हमारी उत्पादकता बढ़ा सकती है। कृत्रिम बुद्धि की मदद से हम दोहराए जाने वाले कार्यों को स्वचालित कर सकते हैं, जिससे उत्पादन के ख़र्च में बचत होती है। कृत्रिम बुद्धि द्वारा बड़े आँकड़ों का शीघ्र विश्लेषण वित्तव्यवस्था में सहायक होगा। साथ ही रोग के लक्षणों का सटीक विश्लेषण चिकित्सकों को रोग निदान करने में सहायक हो सकता है।

स्टीवन हाकिंस के अनुसार हमें कृत्रिम बुद्धि के विकास पर आगे बढ़ने की ज़रूरत तो है लेकिन हमें इसके वास्तविक ख़तरों के प्रति भी सचेत रहने की आवश्यकता है। कृत्रिम बुद्धि का अत्यधिक विकास मानव जाति के अंत का कारण बन सकता है। जिस प्रकार मानव कृत्रिम बुद्धि की सोचने व समझने की क्षमता को बढ़ाता जा रहा है, भविष्य में हो सकता है कि कृत्रिम बुद्धि अपने सारे निर्णय खुद ले और अनियंत्रित होकर मनुष्य के हर निर्णय में हस्तक्षेप करे। कृत्रिम बुद्धि मनुष्य के लिए एक वरदान है, परंतु किसी भी चीज़ का हद से अधिक उपयोग विनाशकारी होता है।

अंत में, कृत्रिम बुद्धि में नए अवसर पैदा करके हमारे दैनिक जीवन में क्रांति लाने की क्षमता है। किन्तु इसके दुरुपयोग से अनैतिकता फैलने का भय है। सम्भव है कि रोबोट द्वारा नौकरी विस्थापन से बेरोज़गारी भी बढ़े। विशेषरूप से कला एवं रचनात्मक उद्योग में इसकी घुसपैठ शुरू हो गई है। इसका दुर्भावनापूर्ण उपयोग नकली समाचार बनाकर जनता की राय में हेरफेर करने में किया जा सकता है। यह आवश्यक है कि हम कृत्रिम बुद्धि के उपयोग को सावधानी के साथ करें और ऐसे नैतिक दिशानिर्देश विकसित करें जो व्यक्तियों और समाज के कल्याण को प्राथमिकता देते हैं। ऐसा करके, हम कृत्रिम बुद्धि के जोख़िम को कम करते हुए इसका लाभ उठा सकते हैं।

BLANK PAGE

Permission to reproduce items where third-party owned material protected by copyright is included has been sought and cleared where possible. Every reasonable effort has been made by the publisher (UCLES) to trace copyright holders, but if any items requiring clearance have unwittingly been included, the publisher will be pleased to make amends at the earliest possible opportunity.

To avoid the issue of disclosure of answer-related information to candidates, all copyright acknowledgements are reproduced online in the Cambridge Assessment International Education Copyright Acknowledgements Booklet. This is produced for each series of examinations and is freely available to download at www.cambridgeinternational.org after the live examination series.

Cambridge Assessment International Education is part of Cambridge Assessment. Cambridge Assessment is the brand name of the University of Cambridge Local Examinations Syndicate (UCLES), which is a department of the University of Cambridge.

© UCLES 2025